CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सूर्य-पुत्र शनिदेव की कथा

SCANNED

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

॥ श्रीः ॥

॥ सूर्यपुत्र नमस्तेऽस्तु भास्करेऽभयदाय च ॥

शनि-देव की चमत्कारी कथा

संकलनकर्ता

स्वामी श्री राघवेन्द्राचार्य जी महाराज

प्रकाशक

श्री 'सुदर्शन चक्र' प्रकाशन
श्रीरंग मन्दिर,
ब्यावर (अजमेर–राज०)

प्रतियां १०००

गुरु पूर्णिमा सं० २०२९

मूल्य १ रुपया

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मुद्रक :
प्रिन्ट हाउस
अजमेर

सर्वाधिकार सुरक्षित

प्राप्ति स्थान :
स्वामी राघवेन्द्राचार्य
श्री रंगजी मन्दिर
ब्यावर (अजमेर-राज०)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

॥ श्रीः ॥

॥ सूर्यपुत्र नमस्तेऽस्तु भास्करेऽभयदाय च ॥

शनि-देव की चमत्कारी कथा

संकलनकर्ता

स्वामी श्री राघवेन्द्राचार्य जी महाराज

प्रकाशक

श्री 'सुदर्शन चक्र' प्रकाशन

श्रीरंग मन्दिर,

ब्यावर (अजमेर–राज०)

प्रतियां १०००

गुरु पूर्णिमा सं० २०२९

मूल्य १ रुपया

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मुद्रक :
प्रिन्ट हाउस
अजमेर

सर्वाधिकार सुरक्षित

प्राप्ति स्थान :
स्वामी राघवेन्द्राचार्य
श्री रंगजी मन्दिर
ब्यावर (अजमेर-राज०)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भूमिका

वैज्ञानिकों एवं सृष्टिविदों के अनुसार यह सारा विश्व अणुओं से बना हुआ है। जिन अणुओं से अंतरिक्ष स्थित ग्रह पिण्डों का निर्माण हुआ है। उन्हीं अणुओं द्वारा मानव शरीर का भी निर्माण हुआ है। अतःएव अंतरिक्ष स्थित ग्रहों की गति का मानव शरीर पर प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूपेण प्रभाव अवश्य पड़ता है। यह धारणा कोरी कपोल कल्पना न होकर वैज्ञानिक तथ्यों पर आधारित है।

अंतरिक्ष स्थित ग्रह-पिंड अपनी स्थिति के अनुसार शुभ व अशुभ फल प्रदान करते हैं। ग्रहों का प्रभाव संसार, राष्ट्र, समाज, वनस्पति पशुओं एवं मानव पर अनिवार्य रूप से पड़ता है। इनमें से चन्द्रमा एवं सूर्यादि ग्रहों का प्रभाव तो मानव के दैनिक जीवन से प्रत्यक्ष ही संबंधित दिखाई देता है। ताप, प्रकाश, वर्षा, फसलें, रोग, ज्वार-भाटा आदि का सूर्य एवं चन्द्रमा से सीधा संबंध है। इसी प्रकार मानव के रक्त परिभ्रमण, विचार-स्वास्थ्य तथा महिलाओं के रजःचक्र का भी सूर्य, चन्द्र से सीधा संबंध है।

यह एक बड़ा सूक्ष्म एवं विस्तृत विषय है। इस क्षेत्र में भारतीय तथा अनेक देशों के विद्वानों ने खोजें करके कई निष्कर्ष निकाले हैं, किन्तु उन सब पर इस छोटीसी पुस्तिका में प्रकाश डालना असंभव है।

हाँ! तो हम यह बता रहे थे कि मानव जीवन का ग्रहों की गति से चोली दामन का संबंध है। यद्यपि आकाश में कई ग्रह हैं, किन्तु भारतीय ज्योतिष शास्त्र में नव ग्रहों को प्रमुख माना है जिनका मानव जीवन से अधिक सम्बन्ध है। नव ग्रहों में शनि-ग्रह सबसे बड़ा है। गणित ज्योतिष के अनुसार ये प्रत्येक राशि पर ३० माह निवास

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

करते हैं, और फलित ज्योतिष के अनुसार जब ये मनुष्य की राशि से १२वें व जन्म स्थान, दूसरे स्थान, पर आते हैं तो ७॥ साल का समय बड़ा कष्टप्रद रहता है। इसी प्रकार चौथे व आठवें स्थान पर भी ढ़ाई-ढ़ाई साल तक पीड़ादायक रहते हैं।

सभी ग्रह अपने अपने स्थान के अनुसार शुभ अशुभ फल देते ही हैं। किन्तु पीड़ादायक ग्रहों के कोप से बचने के उपाय भी ऋषि-महर्षियों ने खोज निकाले हैं।

यद्यपि प्रतिवर्ष ज्येष्ठ मास (जून) में सूर्य देव अपनी प्रखर किरणों से सबको जलाते हैं। किन्तु जिनके पास उससे बचाव के उपाय (छाता, जूता, पंखा, शीतल पेय आदि) उपलब्ध हैं, उन्हें उतनी पीड़ा का अनुभव नहीं होता। इसी प्रकार शनि महाराज के कोप से बचने के उपाय भी हमारे पुराणों एवं शास्त्रों में उपलब्ध हैं, जिसका सम्यक् रूपेण उपयोग करने से लाभ उठाया जा सकता है। आवश्यकता केवल श्रद्धा की है। बाकी जो लोग केवल तर्क वितर्क एवं अश्रद्धा के भंवरजाल में पड़े रहते हैं, वे अपनी हठधर्मी के कारण कष्ट उठाते हैं। इसका कोई उपाय नहीं है।

प्रस्तुत पुस्तिका में शनिदेव के कोप निवारणार्थ शास्त्रानुसार सभी विधियों का समुचित रूपेण वर्णन किया गया है।

आशा है, श्रद्धालु व्यक्ति इससे लाभान्वित होंगे।

—प्रकाशक

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ शनैश्चर देवता कथा प्रारंभ्यते

महर्षि नारद जी ने हाथ जोड़कर शंकर भगवान् से पूछा ? हे सुरश्रेष्ठ ! शनैश्चर की दी हुई पीड़ा कैसे दूर होती है ? कृपा करके बताइये।

श्री महादेवजी बोले—देवर्षे नारद ध्यान लगाकर सुनो, ये शनैश्चर देवताओं में प्रसिद्ध कालरूपी महान ग्रह हैं। इनके मस्तक पर जटा है, शरीर में बहुत से रोएँ हैं तथा दानवों को भय पहुँचाने वाले हैं।

पूर्वकाल के त्रेतायुग की बात है, रघुवंश कुल में दशरथ नाम के एक बहुत प्रसिद्ध राजा होगये हैं। वे चक्रवर्ती सम्राट् महान वीर तथा सातों द्वीपों के स्वामी थे। उन दिनों ज्योतिषियों ने यह जानकर कि शनैश्चर कृतिका नक्षत्र के अन्त में जा पहुँचे हैं, ऐसा राजा को सूचित किया। महाराज ! इस समय शनिदेव—रोहिणीनक्षत्र का भेदन करके आगे बढ़ेंगे; यह अत्यन्त उग्र 'शाकट भेद' नामक योग है, जो देवताओं तथा असुरों के लिए भी भयंकर है। इसमें बारह वर्षों तक संसार में अत्यन्त भयानक दुर्भिक्ष फैलेगा। यह सुनकर राजाने मंत्रियों के साथ विचार किया, और अपने गुरु वसिष्ठ आदि ब्राह्मणों से पूछा, पूज्य द्विजवरों ! कृपा करके बताइये, इस संकट को रोकने का यहाँ कौन-सा उपाय है जिससे सभी प्रजाजनों की रक्षा होजाय। वही बताने की कृपा करें।

गुरु वसिष्ठ जी बोले—राजा दशरथ ! यह रोहिणी प्रजापति ब्रह्माजी का नक्षत्र है, इसका भेद होजाने पर प्रजा कैसे रह सकती है। ब्रह्मा और इन्द्र आदि के लिए भी यह योग असाध्य है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

महादेवजी कहते हैं—बेटा नारद ! इस बात पर विचार करके राजा दशरथ ने मनमें महान साहस का संग्रह किया और दिव्य अस्त्र शस्त्रों सहित धनुष लेकर रथ पर आरूढ़ हो बड़े वेग से वे नक्षत्र-मण्डल आकाश में पहुंच गये। रोहिणी पृष्ठ सूर्य से सवालाख योजन ऊपर है; वहाँ पहुंचकर राजा ने धनुष को कान तक खींचा और उस पर संहारास्त्र का संधान किया। वह अस्त्र देवता और असुरों के लिए भयंकर था। उसे देखकर शनिदेव कुछ भयभीत होकर हँसते हुए बोले—राजेन्द्र दशरथ ! तुम्हारा महान् पुरुषार्थ शत्रु को भी भय पहुँचाने वाला है। मेरी नजर में आकर देवता, असुर मनुष्य, सिद्ध, विद्याधर और नाग सब भस्म होजाते हैं। किन्तु तुम बच गये। अतः महाराज दशरथ ! तुम्हारे तेज और हिम्मत से मैं बड़ा प्रसन्न होगया हूं। वर मांगो; तुम अपने मनसे जो कुछ मांगोगे, उसे अवश्य दे दूँगा।

दशरथजी ने कहा—हे शनिदेव ! जब तक नदियाँ और समुद्र है, जब तक सूर्य और चंद्रमा सहित पृथ्वी कायम है, तब तक आप रोहिणी नक्षत्र का भेदन करके आगे न बढ़ें। साथ ही कभी बारह वर्षों तक दुर्भिक्ष (काल) न करें।

शनिदेव बोले—एवमस्तु (ऐसा ही होवे)।

महादेवजी कहते हैं—हे नारद ! ये दोनों वर पाकर राजा बड़े प्रसन्न हुए, उनके शरीर में रोमाञ्च (गद्गद्) हो आया। वे रथ के ऊपर धनुष डालकर हाथ जोड़ शनिदेव की इस प्रकार स्तुति करने लगे।

दशरथ उवाच

श्लोकः—

नमः कृष्णाय नीलाय शिति कण्ठनिभाय च।
नमः कालाग्नि रूपाय कृतान्ताय च वै नमः॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नमो निर्मोसदेहाय दीर्घश्मश्रु जटाय च।
नमो विशाल नेत्राय शुष्कोदर भयाकृते ।।
नमः पुष्कल गात्राय स्थूलरोम्णे च वै पुनः।
नमो दीर्घाय शुष्काय कालदंष्ठ्र नमोऽस्तुते ।।
नमस्ते कोटराक्षाय दुर्निरीक्ष्याय वै नमः।
नमो घोराय रौद्राय भीषणाय करालिने ।।
नमस्ते सर्व भक्षाय बालिमुख नमोऽस्तुते।
सूर्यपुत्र नमस्तेऽस्तु भास्करेऽभयदाय च ।।
अधोदृष्टे नमस्तेऽस्तु संवर्तक नमोऽस्तुते।
नमो मन्दगते तुभ्यं निस्त्रिंशाय नमोऽस्तुते ।।
तपसा दग्धदेहाय नित्यं योगरताय च।
नमो नित्यं क्षुधार्ताय अतृप्ताय च वै नमः।।
ज्ञान-चक्षुर्नमस्तेऽस्तु कश्यपात्मजसूनवे।
तुष्टो ददासि वै राज्यं रुष्टो हरसि तत्क्षणात् ।।
देवासुर मनुष्याश्च सिद्धि विद्याधरोरगाः।
त्वया विलोकिताः सर्वे नाशं यान्ति समूलतः।।
प्रसादं कुरु मे देवं वरार्होऽहमुपागतः ।।

अर्थः—राजा दशरथ बोले—जिनके शरीर का वर्ण कृष्ण, नील तथा भगवान शंकर के समान है, उन शनिदेव को नमस्कार है।

जो जगत् के लिए कालाग्नि एवं कृतान्त रूप हैं, उन शनैश्चर देव को बारंबार नमस्कार है।

जिनका शरीर कंकाल है, तथा जिनकी दाढ़ी मूंछ और जटा बढ़ी हुई है, उन शनिदेव को प्रणाम है।

जिनके शरीर का ढाँचा फैला हुआ है, जिनके रोएँ बहुत मोटे हैं, जो लंबे चौड़े किंतु सूखे शरीर वाले हैं, तथा जिनकी दाढ़ें कालरूप हैं, उन शनिदेव को बारंबार प्रणाम है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हे शने ! आपके नेत्र खोखले (गुफा) के समान गहरे हैं, आपकी और देखना कठिन है, आप घोर, रौद्र, भीषण और विकराल हैं, आपको नमस्कार है।

बलिमुख ! आप सब कुछ भक्षण करने वाले हैं, आपको नमस्कार है।

सूर्यनन्दन ! भास्कर पुत्र ! आप सब को अभय देने वाले देवता ! आपको नमस्कार है।

मन्दगति से धीरे धीरे चलने वाले हे शनैश्चर ! आपका प्रतीक तलवार के समान है, आपको पुनः पुनः प्रणाम है।

आपने तपस्या से अपनी देह को दग्ध कर दिया है; आप सदा योगाभ्यास में तत्पर, भूख से आतुर और अतृप्त रहते हैं, आपको सदा सर्वदा नमस्कार है। हे ज्ञान नेत्र ! आपको नमस्कार है।

कश्यपनन्दन सूर्य के पुत्र शनिदेव ! आपको नमस्कार है। आप प्रसन्न होने पर राज्य देदेते हैं, और रुष्ठ होने पर उसे तत्क्षण हर लेते हैं। देवता, असुर, मनुष्य, सिद्ध, विद्याधर और नाग—ये सब आपकी दृष्टि पड़ने पर समूल नष्ट होजाते हैं। हे देव ! आप मुझ पर प्रसन्न होइये। मैं वर पाने योग्य हूं और आपकी शरण में आया हूं।

महादेवजी कहते हैं—हे बेटा नारद ! राजा दशरथजी के इस प्रकार स्तुति करने पर ग्रहों के राजा महाबलवान् सूर्य पुत्र शनैश्चर बोले—उत्तम व्रत के पालक राजेन्द्र ! तुम्हारी इस स्तुति से मैं प्रसन्न हूं। रघुनन्दन तुम इच्छानुसार वर मांगो, मैं तुम्हें अवश्य दूंगा।

राजा दशरथ बोले—सूर्यनन्दन ! आज से आप देवता, असुर, मनुष्य, पशु, पक्षी तथा नाग आदि किसी भी प्राणी को पीड़ा न देवें।

शनि ने कहा—राजन् ! देवता, असुर, मनुष्य, सिद्ध, विद्याधर तथा राक्षस—इनमें से किसी के भी मृत्युस्थान, जन्मस्थान अथवा चतुर्थस्थान में रहूं, तो उसे मृत्यु का कष्ट दे सकता हूं। किन्तु जो

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रद्धा से युक्त, पवित्र और एकाग्रचित होकर मेरी लोहमयी सुन्दर प्रतिमा (मूर्ति) का शमी पत्रों (खेजड़ी के पत्तों) से पूजन करके तिल मिश्रित उड़द, भात, लोहा, काली गौ या काला बैल ब्राह्मण को दान करता है, तथा विशेषतः मेरे दिन शनिवार को इस स्तोत्र से मेरी पूजा करता है, पूजन के पश्चात भी हाथ जोड़कर मेरे स्तोत्र का जप करता है, उसे मैं कभी भी पीड़ा नहीं दूंगा। गोचर में, जन्मलग्न में, दशाओं तथा अन्तर दशाओं में ग्रह-पीड़ा का निवारण करके मैं सदा उसकी रक्षा करूंगा। इसी विधि विधान से सारा संसार पीड़ा से मुक्त होसकता है। हे रघुनन्दन दशरथ! इस प्रकार मैंने युक्ति से तुम्हें वरदान दिया है।

महादेवजी कहते हैं—हे नारद! वे तीनों वरदान पाकर उस समय राजा दशरथ ने अपने को (कृतार्थ) धन्य धन्य माना। वे शनैश्चर देव को नमस्कार करके उनकी आज्ञा ले रथ पर सवार होकर बड़े वेग से अपने स्थान अयोध्या को चले गये। उन्होंने संसार के लिए कल्याण प्राप्त कर लिया था। जो शनिवार को सवेरे उठकर स्नानादि से पवित्र होकर इस स्तोत्र का पाठ करता है, तथा पाठ होते समय जो श्रद्धापूर्वक इसे सुनता है, वह मनुष्य पाप से मुक्त हो स्वर्गलोक में प्रतिष्ठित होता है।

इत्यार्षे श्री पद्मपुराणे उत्तराखण्डे शनिश्चर कथायां समाप्त ।।

शनिदेव के साधारणदान की विधि

उड़द काले १। पाव	तिल काले १। पाव
राई काली १। पाव	गुड़ काला १। पाव
तेल काला १। पाव	काला कपड़ा १। हाथ
काले फूल	नमक डली १। सेर
दक्षिणा १।) रुपया	जनेऊ जोड़ा १ नग
पान १ सुपारी १	शनि की पुस्तक १

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

में डालदें। भोजन में उड़द के आटे का बना पदार्थ पंजीरी कुछ तेल में पका हुआ पदार्थ तथा केला फल लेना चाहिए। यही पदार्थ दान भी करना चाहिए। व्रत के अन्तिम शनिवार को हवन पूर्णाहुति के बाद तेल में पकी हुई वस्तुओं को तथा काला वस्त्र, कंबल, उड़द, देशी जूता तेल लगाकर दान करना चाहिए। इस व्रत से सब प्रकार की सांसारिक हैरानी दूर हो जाती है। झगड़े में विजय होती है। लोह मशीनरी कारखाने एवं फेक्टरीयां वालों के व्यापारों में उन्नति होती है।

(एक भारी समस्या का सरल समाधान)

हमारे पास भारत के कोने कोने से इस आशय के पत्र आते ही रहते हैं, कि हमें अमुक ग्रह की शांति के प्रयोग व विधि बताइए, अभी हमारे ग्रह कैसे हैं। अमुक चिन्ता कब मिटेगी अमुक कार्य कब तक होगा आदि नाना प्रकार के प्रश्नों की झड़ी लगी रहती है।

उपरोक्त सारे पत्रों के उत्तर अब तक हम ही देते रहे हैं। किन्तु कार्य के विस्तृत होजाने एवं हम कई अन्य परोपकारी कार्यों में व्यस्त रहने से सभी लोगों को समय पर उत्तर देने में विलंब हो जाता है, जिससे श्रद्धालु लोगों को कष्ट उठाना पड़ता है जिसके लिए हमें खेद है।

इस समस्या के निराकरण के लिए हमने उपरोक्त कार्यों के लिए स्वतंत्र रूप से एक विभाग ही खोल दिया है, जो हमारे तत्त्वावधान में सुचारु रूप से कार्य कर रहा है।

अब आप नवग्रह बाधा संबंधी तथा अन्य किसी भी प्रकार का ज्योतिष संबंधी कार्य हो उसके संबंध से निःसंकोच रूप से लिख सकते हैं। टेवा, जन्मपत्री, वर वधू के टेवे के मिलान, शुभ मुहूर्त, नवग्रह शांति, तंत्र, मंत्र, जप, आदि कार्यों के लिए कहीं भटकने की जरूरत नहीं है। तुरन्त निम्नलिखित पते पर लिखिए। इसके अलावा अन्य किन्हीं भी जटिल समस्याओं जैसे राजकीय, पारिवारिक, व्यापारिक एवं व्यक्तिगत इच्छाएं आदि सभी के लिए जन्म पत्री भेजकर राय ले सकते हैं। किसी प्रकार की कानूनी राय के लिए कृपया न लिखिए।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सभी मामले में पांच रुपए अग्रिम भेजना अनिवार्य है। विशेष फीस के लिए संपर्क स्थापित होने पर ज्ञात हो सकती है।

इसके अतिरिक्त सभी प्रकार के रोगों में भी रोगी का पूरा हाल लिखने पर निःशुल्क राय दी जाती है। विशेषकर स्वांस, पेट की गैस, वायु, नेत्र रोग, नेहरू (बाल) रोगों की अचूक परीक्षित औषधियों से हजारों रोगी प्रतिवर्ष लाभ उठा रहे हैं।

सन्तान सुख के अभाव से दुःखी सज्जन विशेष तौर से पत्र व्यवहार करें। हमारे यहां इस समस्या पर सभी दृष्टियों से विचार कर अचूक राय दी जाती है। यह विषय बड़ा विस्तृत है। कुछ लोग केवल औषधियों के चक्कर में ही पड़े रहते हैं वे यह नहीं देखते हैं कि हमारे ग्रह क्या कहते हैं ? तो कुछ लोग केवल ज्योतिषियों के पीछे ही पड़े रहते हैं वे अनुकूल समय में अमृतोदय औषधियों का लाभ नहीं उठा सकते। कहने का तात्पर्य यह है कि समस्या का सर्वांगीण हल विरले ही निकाल सकते हैं। हमारे यहां इस समस्या के सभी पहलुओं पर प्रकाश डाल कर राय दी जाती है। यही कारण है कि आज कई निराश माताओं की खाली गोदों में देश के होनहार फूल हंस रहे हैं। इच्छुक सज्जन पत्र के साथ जन्म लग्न की सही नकल अवश्य भेजें। इसके अभाव में जन्म, संवत्, मास, पक्ष, दिन ठीक जन्म का समय लिखकर भेजें। जन्म पत्री के साथ दस रुपए अग्रिम भेजना जरूरी है। बिना जन्म पत्री वाले सज्जन पन्द्रह रुपए अग्रिम भेजें। जन्म कुण्डली यदि पति-पत्नि दोनों की उपलब्ध हो तो बहुत उत्तम रहेगा।

पत्र व्यवहार का पता :—

श्री रंग परामर्श विभाग

सैन्दरा रोड

ब्यावर

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh